International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 04-04-2023, Accepted: 05-05-2023, Published: 20-05-2023
Volume 9, Issue 3, 2023, Page No. 31-32

पार्श्व गायिका कुमारी कंचन का हिंदी चित्रपट संगीत में अवदान

डा. शम्पा चौधरी
वी. एम. एल. जी. कॉलेज, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
चित्रपट संगीत, जिसे फिल्म संगीत भी कहा जाता है, भारतीय सिनेमा जगत का एक अभिन्न अंग है। भारतीय सिनेमा के विकास के साथ ही चित्रपट संगीत विकसित होता गया। 1930 के दशक में जब भारतीय सिनेमा का उदय हो रहा था तब सिनेमा में संगीत ने भी अपनी एक अहम् भूमिका निभाते हुए, एक महत्वपूर्ण स्थान बनानी शुरु कर दी। धीरे–धीरे चित्रपट संगीत की एक अलग पहचान बन गई।
हिन्दी चित्रपट संगीत का अतीत अत्यंत गौरवशाली रहा है, जिसमें अनेकों कलाकारों एवं गायक–गायिकाओं ने समय–समय पर अपना महत्वपूर्ण, असाधारण एवं बहुमूल्य योगदान दिया है। चित्रपट संगीत के क्षेत्र में कुछ प्रमुख कलाकार जैसे – सुरैया, लता मंगेशकर, आशा भोंसले, शमशाद बेगम इत्यादि ने अपने मधुर कंठ से सिनेमा संगीत को उच्च स्थान पर स्थापित किया है। इसी क्रम में कुमारी कंचन ने अपने करीब दो दशक के छोटे से कार्यकाल में कई सदाबहार एवं यादगार गीतों को प्रस्तुत कर चित्रपट संगीत के कई गानों को अमर बना दिया है।
प्रस्तुत शोध प्रपत्र में पार्श्व गायिका कुमारी कंचन का हिन्दी चित्रपट संगीत में योगदान के विषय में चर्चा किया जा रहा है।

मूल शब्दः चित्रपट संगीत, गायन, अभिनय, गीत संगीत, एकल गीत, युगल गीत, कुमारी कंचन

कुमारी कंचन का प्रारंभिक जीवन

पार्श्व गायिका कुमारी कंचन का पूरा नाम कंचन दिनकर राव माली था लेकिन चित्रपट जगत में इन्हें कंचन के नाम से जाना जाता था। कंचन का जन्म 16 मार्च, 1950 को कोल्हापुर महाराष्ट्र में मराठी पृष्ठभूमि के संगीत प्रेमी हिंदू परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम दिनकर राव माली था। बचपन से ही कंचन को चित्रपटों में गीत गाने का बड़ा शौक था। उनके माता–पिता ने संगीत के प्रति रुचि को देखते हुए अपनी पुत्री को बहुत प्रोत्साहित किया। कंचन ने जयपुर के श्री लक्ष्मी प्रसाद से संगीत की विधिवत शिक्षा ग्रहण की। जब ये बड़ी हुईं तो संगीत निर्देशक कल्याणजी–आनंदजी के छोटे भाई बाबला विरजी शाह के वृंदवादन समूह में शामिल हुईं और कुछ समय पश्चात दोनों ने विवाह कर लिया। विवाह के बाद कंचन ने अपने पति के साथ 'कंचन–बाबला ऑर्केस्टा' नाम का एक दल बनाया और देश–विदेश में अनेक संगीत के कार्यक्रम दिये, जिन्हें भरपूर लोकप्रियता मिली। लगभग पैंतीस वर्षों तक यह सिलसिला चलता रहा। इस दौरान उन्हें कनाडा, यू.एस.ए, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड, त्रिनिदाद, गुयाना, हॉलैंड, सूरीनाम आदि कई देशों में मंच प्रदर्शन का अवसर प्राप्त हुआ। इस दम्पत्ति के दो बच्चे हैं। एक बेटी जिसका नाम निशा है और एक बेटा जिसका नाम वैभव है।

चित्रपट संगीत में जीवन यात्रा

कंचन ने हिंदी चित्रपटों में पार्श्व गायिका के रूप में सर्वप्रथम संगीतकार कमलकांत के निर्देशन में 'जय ज्वाला' (1972) में दो गीतों को अपने स्वरों से सजाया था। उन्होंने प्रथम गीत मो. रफी व मनहर उदास के साथ गाया था – तेरी जोत जले सुबह शाम और दूसरा युगल गीत उन्होंने महेंद्र कपूर के साथ गाया था – झूठ बोलना पाप है यारों। इसके बाद उन्होंने केवल कल्याणजी–आनंदजी के संगीत निर्देशन में ही पार्श्वगायन किया। उनके कुछ गीतों ने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की। 'रफूचक्कर' (1975) में पार्श्व गायक शैलेन्द्र के साथ गाया युगल गीत 'तुमको मेरे दिल ने पुकारा है बड़े नाज से' उनका पहला लोकप्रिय गीत था। जिसने संगीत श्रोताओं के मध्य उनकी पहचान बनाई। 'धर्मात्मा' (1975) में पार्श्व गायक मुकेश कुमार के साथ गाए दो गीत 'क्या खूब लगती हो' तथा 'तुमने कभी किसी से प्यार किया है' अपने समय के मशहूर गीत थे। 'कालीचरण' (1976) में अनुराधा पौडवाल के साथ गाया गीत 'एक बटा दो, दो बटा चार' तो आज भी बच्चों का मनपसंद गीत बना हुआ है। 'कुर्बानी' (1980) में गाए उनके गीत भी खूब लोकप्रिय हए थे। 'लैला मैं लैला, ऐसी हूँ लैला' तो कंचन का सबसे अधिक प्रसिद्ध गीत है जिसके लिए उन्हें वर्ष 1981 में सर्वश्रेष्ठ गायिका का फिल्मफेयर पुरस्कार के लिए मनोनीत किया गया था। भारत में बाबला इस गीत में रोटोड्रम वाद्य का उपयोग करने वाले पहले व्यक्ति थे। इसी चित्रपट का एक गीत था जो उन्होंने अन्य साथियों मनहर उदास व आनंद कुमार के साथ मिलकर गाया था, 'हम तुम्हें चाहते हैं ऐसे' को भी संगीत श्रोताओं का भरपूर प्यार मिला था। इस चित्रपट के गीतों के लिये कंचन को ग्रामोफोन कंपनी की ओर से गोल्डन डिस्क प्राप्त हुई थी।
संगीतकार कल्याणजी–आनंदजी के निर्देशन में उनके गायन से सजी अन्य फिल्में है–'अलबेली' (1974) में एक युगल गीत सुमन कल्याणपुर के साथ, 'वरदान' में एक समूह गीत मन्ना डे व ओम प्रकाश के साथ, 'हर–हर महादेव' में एक एकल गीत, 'पाप और पुण्य' में एक एकल तथा एक युगल मुकेश के साथ, 'उलझन' (1975) में एक युगल गीत उषा तिमोथी के साथ, 'चोरी मेरा काम' में एक समूह गीत अमित कुमार, किशोर कुमार के साथ, 'हिमालय से ऊँचा' में एक युगल गीत बेबी शिवांगी के साथ, 'दरिंदा' (1977) में एक युगल येसुदास के साथ, 'कसम खून की' में एक समूह गीत सुलक्षणा पंडित, मो. रफी के साथ, 'खेल खिलाड़ी का' में एक युगल मन्ना डे, आशा भोंसले के साथ, 'बेशरम' (1978) में एक समूह गीत उषा एवं अनुराधा पौडवाल के साथ, 'अतिथि' में एक युगल गीत अनुराधा पौडवाल के साथ और एक समूह आशा भोंसले व उषा तिमोथी के साथ, सौ दिन सास के और (1980) में दो युगल गीत सुरेश वाडकर, आशा भोंसले के साथ, 'दो शत्रु' में एक एकल गीत, 'दो गुरु' (1982) में एक एकल, 'विधाता' में एक समूह गीत अन्य साथियों के साथ 'हादसा' (1983) में एक एकल गीत। सभी चित्रपटों में कंचन ने मौज मस्ती से भरे, रोमांचक, उदासी तथा धार्मिक हर प्रकार के गीत गाए हैं। कंचन ने अपने पति बाबला की संगीतबद्ध चित्रपटों

में भी गीत गाए। जैसे – मीठा ज़हर (1985) में तीन एकल और एक युगल नितिन मुकेश के साथ, 'ड्यूटी' (1986) में एक एकल एवं चार युगल गीत, इन दोनों फिल्मों में उन्होंने प्रमुख गायिका की भूमिका निभाई।

कंचन के गाए गीतों के कई निजी एलबम भी जारी हुए हैं। जैसे– 'ना मानूँ' , 'कुछ–कुछ', 'बोलो – बोलो', 'काहे मारे नजरिया', 'मोरी चुनरिया', उनके कुछ मशहूर एलबम हैं। वर्ष 1982 में जारी उनके भोजपुरी एलबम 'कैसे बनी' ने तो हर जगह जबरदस्त धूम मचाई थी। एक अन्य एलबम 'कुछ गड़बड़ है' ने 'वेस्ट इंडीज में सफलता के नए रिकॉर्ड बनाए थे।

गायन विशिष्टता

उनकी आवाज में तीखापन था लेकिन मिठास थी। इसी विशिष्टता के कारण उनके कई गीत सुनने में बड़े अच्छे लगते हैं। उन्होंने सभी तरह के गीत गाए थे लेकिन वे हिंदी चित्रपट जगत में ज्यादा समय तक टिक न सकी क्योंकि उस समय बहुत सी प्रतिष्ठित गायिकाओं ने चित्रपट जगत में अपनी एक जगह बनाई हुई थी। कंचन को उनकी आवाज और शैली को अन्य स्थापित गायिकाओं से अलग करने की आवश्यकता थी। शायद इसी कारण से, हिंदी चित्रपटों के लिए पार्श्व गायिका के रूप में उनका करियर सीमित रहा। 'मिस्टर श्रीमती' (1994) उनके गायन की अंतिम फिल्म रही, जिसमें उन्होंने बाबला के निर्देशन में एक युगल गीत 'जाने क्या बात हो गई' उदित नारायण के साथ गाया था। इसके पश्चात् ये अपने पति के साथ देश–विदेश में जगह–जगह कार्यक्रम देने में व्यस्त रहने लगी। बाबला और कंचन ने 1980 और 1990 के दौरान बड़े पैमाने पर देश–विदेश का दौरा किया और अपने प्रदर्शन से श्रोताओं को अपनी ओर आकर्षित किया व खूब प्रशंसा बटौरी। बाद के वर्षों में उनके साथ उनके बच्चे, निशा और वैभव शाह भी मंच पर होते थे। लेकिन 26 जुलाई, 2004 को चौवन वर्ष की उम्र में कंचन की असामयिक मृत्यु के बाद प्रदर्शन का सिलसिला धीमा पड़ गया। कंचन के निधन के बाद उनके पति बाबला शाह केवल चुनिंदा शो ही करते हैं।

कंचन ने अपने तेइस वर्षों के सांगीतिक सफर में मन्ना डे, मुकेश कुमार, शैलेन्द्र कुमार, नितिन मुकेश, अमित कुमार, मो. रफी, किशोर कुमार, उदित नारायण, आशा भोंसले, सुमन कल्याणपुर, उषा तिमोथी तथा अनुराधा पौड़वाल के साथ कुछ चुनिंदा गीत गाए एवं चित्रपटों में जीनत अमान, नीतू सिंह, हेमा मालिनी, सुलक्षणा पंडित आदि लोकप्रिय अभिनेत्रियों पर उनके गाए हुए गीतों को फिल्माया गया। कुछ गीत अत्यधिक लोकप्रिय हुए, जिन्हें आज भी संगीत प्रेमी बड़े चाव से सुनते हैं।

कुमारी कंचन द्वारा गाए कुछ प्रमुख एवं सदाबहार गीत

1. क्या खूब लगती हो (मुकेश कुमार के साथ), धर्मात्मा (1975)
2. तुमको मेरे दिल ने पुकारा है (शैलेन्द्र सिंह के साथ), रफू चक्कर (1975)
3. ऐ जमाने तू कर ले सितम पे सितम, रफू चक्कर (1975)
4. आओ सखियों पहली बार, दो शत्रु (1976)
5. एक बटा दो–दो बटे चार (अनुराधा पौडवाल के साथ), कालीचरण (1976)
6. गा के जियो तो गीत है जिन्दगी (किशोर कुमार, अनुराधा पौडवाल के साथ), अतिथि (1978)
7. लैला मैं लैला (अमित कुमार के साथ), कुर्बानी (1980)
8. हम तुम्हें चाहते हैं ऐसे (मनहर उदास, आनंद कुमार के साथ), कुर्बानी (1980)
9. सात सहेलियाँ खड़ी खड़ी (किशोर कुमार के साथ), विधाता (1982)
10. मैंने तुझे देखा है कहीं पहले (नितिन मुकेश के साथ), मीठा जहर (1985)

संदर्भ सूची

1. भार्गव, अनिल, हिन्दी फिल्म संगीत 75 वर्ष का सफर (1931–2005) वाङमय प्रकाशन, जयपुर (वर्ष 2006)
2. भार्गव, अनिल, स्वर की यात्रा (हिन्दी फिल्म गायन की यात्रा 1931–2010) वाङमय प्रकाशन, जयपुर (वर्ष 2014)
3. जौहरी, सीमा, भारतीय चलचित्र संगीत का इतिहास (1900–1947) राधा पब्लिकेशन्स, दिल्ली (वर्ष 2012)
4. सिंह, संचिता, भारतीय फिल्मों में महिला किरदार, नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली (वर्ष 2014).
5. गर्ग, उमा, संगीत का सौन्दर्य बोध (फिल्म संगीत के संदर्भ में) संजय प्रकाशन, दिल्ली (वर्ष 2000)
6. सौरभ, इंदु शर्मा, भारतीय फिल्म संगीत में ताल समन्वय, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली (वर्ष 2006)
7. डा. विमल, हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, संजय प्रकाशन, दिल्ली (वर्ष 2005)
8. लाल, लक्ष्मीनारायण, पारसी हिन्दी रंगमंच, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली (वर्ष 1973)
9- www.youtube.com/kanchan